Shodhpith
International Multidisciplinary Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)
Volume: 1 Issue: 5 September-October 2025

रचनाकार साकेतानंद ओ हुनक सारस्वत–साधना

डॉ0 राज कुमार राय

शोध पर्यवेक्षक, सहायक प्राचार्य, मैथिली विभाग, विद्द सिंद्द जनता. महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

चन्देश्वर राम

शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

भाषाक माध्यमसँ अन्तर्मन केर अभिव्यक्ति थिक–साहित्य। आइ मानव जीवन उद्वेलित भऽगेल अछि। चारूकात अस्त्र–व्यवस्ताक वातावरण व्याप्त भऽ गेल अछि। साहित्य एक एहेन माध्यम थिक जाहिसँ मनुक्खक समस्त विक. ासक समस्याकेँ दूर कयल जा सकैत अछि आ भाषा साहित्य संस्कृति सभ्यताक दृष्टिसँ एहि रोगक निवारणार्थ अचूक दवाइ थिक।[१]

कोनो क्षेत्रक विकासक प्रतिफल ओहि क्षेत्रक बसो–वास, रहन–सहन खान–पान, संस्कृति, सभ्यता, भाषा–साि हत्य आदिसँ परिलक्षित होइत अछि। कोनो समाज आ राष्ट्रक अंतिम लक्ष्य सुसम्पन्न, समुन्नत, सुसम्य आ सुसंस्कृते होयब छैक तँ समाज वा राष्ट्रक भाषा संस्कृति सभ्यताकेँ अपन–अपन क्षेत्र सँ संरक्षण प्राप्त करबाक आवश्यकता होइत छैक।[२]

रचनाकार समाज मध्य रहैत अछि तथा समाजक क्रिया–कलाप, रीति–रेवाज, रहन–सहन, समस्या आदि केँ निकट सँ देखैत रहबाक कारणे ओकरा मन मे प्रतिक्रिया होइत छैक जकरा ओ अपन लेखनीक माध्यमसँ कागज पर अभिव्यक्ति दैत छैक। समाजक पूर्णरूपेण चित्रण करबाक ओ सतत प्रयत्न करैत रहैत अछि। समाज मध्य कतोक तरहक समस्या रहैत छैक। ओहि समस्याकेँ ध्यान में राखि ओकर चित्रण करैत अछि। प्रायरू सभ साहित्यमे ई–बात देखल जाइत अछि। साहित्यक तथा केँ कल्पनाक पुट दऽ ओकरा मनोरंजक अथवा उपयोगी बना कऽ परसबाक प्रयास सेहो कएल जाइत अछि। एहि सँ ओहिमे रोचकता अबैत अछि आ एहि रोचकताक कारणे ओ कृति बेसी पढ़लो जाइत अछि।[३]

मानव समाज अपन पोषणक लेल ज्ञान–रश्मिक जे कोष संचित कयलक अछि, ओकरे साहित्यक संज्ञा देल गेल अछि। साहित्य मानवीय मूल्यक रक्षार्थ अनुपम साधन थिक। साहित्यक विभिन्न विधाक माध्यमसँ समाज के समाजपयोगी सामग्रीक प्राप्ति कऽ अपन –सोच–विचारसँ समाजके सही दिशामे गतिमान करबाक श्लाघनीय प्रयास करैत अछि।[४]

रचनाकार अपन रचनाक माध्यमसँ समाजमे व्याप्त समस्या, कुरीति, विद्रूपता, लोकक इच्छा–आकांक्षामे पूर्तिक अभाव, गरीबी, बेरोजगारी, जनजीवन आदि संग लोकमे असंतोष, कुंठा, संत्रास आदिक समस्या सभकेँ रचनाकार ओकरा देखि रहल छथि। भोगि। रहल छथि तथा ओकरा अभिव्यक्तियों दऽ रहल छथि। इएह अभिव्यक्ति कतहु कथा तऽ कतहु उपन्यास, तऽ कतौ नाटक, कविता तऽ कतौ संस्मरण निबंध आदि भऽ कऽ प्रस्फुटित होइत अछि। इएह साहित्यक उपादान कहबैत अछि। उपादान प्रदान करऽ वला रचनाकार परवर्ती समाजक लेल प्रेरक, अनुकरण

ीय आ सोचकीय बनबैत छथि। ओ समाजक प्रतिबिम्ब होइत छथि। एहने एक गोट सारस्वत साधक रचनाकार छथिदृ साकेतानंदक। ओ अपन साहित्य रचनाक साधनाक बलैं साहित्य जगतमे यश कयौलनि अछि आ समाजकैं बहुत किछु देलनि अछि। ओ समृद्ध पारिवारिक पृष्ठभूमिमे रहितहुँ साहित्यक अभिरूचिक कारणैं विशिष्ट एवं निविष्ट रचनाकारक कोटिमे प्रतिष्ठित छथि।

साकेतानंदक मैथिलीक महत्पूर्ण कथाकार ओ उपन्यासकारमे अग्रगणय छथि। ओ संस्मरणक रचनाक संग हिन्दीमे सेहो किछु रचना कयलनि। एहिठाम हिनक व्यक्तित्व ओ कृतित्व संक्षिप्त सारस्वत विमर्श राखब हमर अभीष्ठ अछि–

मिथिलाक पूर्णियाँ जनपदमे श्रीनगर ड्योढ़ी महत्वपूर्ण ड्योढ़ी एक रहल अछि। ई ड्योढ़ी जमींदारी रूपैं चर्चित रहल अछि। साकेतानंदक पूर्वज एहि ड्योढ़ीक मालिक सभ छलाह। श्रीनगरक चारू दिस हरितिमा पसरल रहैत छल। वर्षा वन छल। संपदायुक्त ई गाम वन्यजीव आ वनक सुषमाक हाथसँ परिवेशित छल। सैकड़ो हजारो गामक–किसान रहैत छल। पैघ जोतदार जमींदार कहबैका सभ छलाह, जतऽ बलैसर गाय आदिक आश्ररू स्थल सेहो छल। तिमन–तरकारी अन्न–पानि सँ भरल। एकर वातावरण अति शुद्ध। पर्यावरण स्वास्थ्य परक। एहि ड्योढ़ी विक्त गेंडाबाड़ी बाघमारा, बघवागाछी प्रचलित नाम सभ छल। चारू भर नदी कोसीक धारा बहैत छल। तहिया एहिठामक सवारी घोड़ा प्रमुख रूपैं पूर्वज लोकनि ई परिसर निविड़ एकांत अरण्य सँ युक्त छल। तहिया जतऽ कतौ किछु नहि तहिया बिजली, तार घर, मोटरकार सहित श्रीनगर आधुनिक भरल छल एहिठाम सँ आधा किलोमीटर पर जंगलक साम्राज्य आरंभ भऽ जाइत छलैक जे आदि वर्षा वन कहबैत छल, जकर चर्च ऊपर कयल गेल अछि।

श्रीनगर ड्योढ़ीक बहुत जमीन नवहट्टा, (सहरसा) मे रहैन। ओतऽ कुमार दिव्यानंद सिंह (साकेतानंदक पित्ती) स्कूलमे शिक्षक छलाह। भैयारि बॉट–बखड़ा भेलाक बाद साकेतानंदक पिताकैं नवहट्टा संपति भेटलनि। ओ सभ एहिठाम रहऽ लगलाह स्पष्ट अछि जे साकेतानंदक पूर्वजक गाम श्रीनगर पूर्णियाँ तऽ साकेतानंदक गाम नवहट्टा, सहरसा भेलनि।

नवहट्टा सहरसा जनपदक एक प्रखंड थिक। ई सहरसा शहर सँ लगभग 20–25 कि०मी० पश्चिममे अवस्थित अछि। एहिमे बारहटा पंचायत अछि। ई पूर्णतरू ग्रामीण परिक्षेत्र अछि, जतऽ कृषि मुख्य आजीविवाक साधन अछि। नवहट्टा कोसी बाढ़िक ऐतिहासिक केन्द्र रहल अछि। एकर प्रधन संस्कृति ग्रामीण परिवेशक अछि। 1984 मे कोसी तटव टूटल छल जाहिमे 96 गाम प्रभावित भेल छल। एकर भाषा मैथिली अछि, लोकनृत्य, लोकगाथा, लोकनाटक आदि सांस्कृतिक संस्कृति युक्त एहि क्षेत्र त्योहार कृषि आधारित मुख अछि।

नवहट्टा क्षेत्र प्राचीनकालमे मिथिला 69 राज्यक अंश छल, जे वैदिक युग (लगभग– 1100–५०० ई पूर्व) मे दक्षिण एशियाक एक प्रमुख राजनीतिक आ सांस्कृतिक केन्द्र छल। ई क्षेत्र इंडो आर्यक लोक द्वारा बसाओल गेल छल। मगध साम्राज्यक विस्तारकैं क्रममे मिथिला एकर अंतर्गत आबि गेल। सहरसा क्षेत्रमे सिकलीगढ़ आ किशनगंज सन्निकट मौर्यकालक स्तंभ भेटब एहि क्षेत्रक प्राचीन महत्ता प्रमाणित करैत अछि। 14म् शताब्दीमे कर्णाट वंश राजा नरसिंह देवक शासनकालमे नवहट्टा क्षेत्रमे सूर्य मंदिरक संरचना बनल। नखइ एहि प्रखंडक साहपुर, मंजहौलमे एक शिव लिंग स्थापित अछि जकरा महाराज शालिवाहन करीब 100 इशा पूर्वमे स्थापित मानल जाइत अछि। हुनकहि पावनि जिमूत वाहन केर नाम पर हिन्दू त्योहार 'जितिया मनाओल जाइत अछि, जे एहि क्षेत्रक सांस्कृतिक विरासतकैं दर्शबैत अछि। 19म् सदी धरि नवहट्टा मुंगेर आ भागल जिलाक अंग छल। 1 अप्रैल 1954 कैं सहरसाकैं अलग जिला बनाओल गेल जाहिमे नवहट्टा सम्मिलित छल 12 अक्टूबर 1972 से सहरसा कोशी प्रमंडलक मुख्यालय बनल। 1991 मे सुपौल जिला सहरसा सँ अलग भेल, जाहिमे नवहट्टाक क्षेत्र छोट भेल। 1961 मे नवहट्टाकैं नगर पंचायतकैं दर्जा भेटल छल। ओ 12 पंचायत युक्त एकटा प्रखंड थिक।

नवहट्टाक इतिहास मुख्य रूपसँ कृषि, बाढ़िक प्रबंधन आ धार्मिक परम्परा सँ जुड़ल अछि। इएह नवहट्टा साकेतानंदक गाम थिक।

विजयानंद सिंह भेलथिन मैथिलीक कथाकार ओ उपन्यासकार मे चर्चित नाम साकेतानंदक पिता ओ कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ विज्ञानक पढ़ाइ कयने रहथिन। ओ अपन आचार्य गुरू अपन पितियौत भाइ कुमार गंगानंद सिंहकैं मानैत छलाह मुदा भीतरिया एक दोसराक प्रेमी छलथिन। जखन कुमार गंगानंद सिंह, बिहारक शिक्षा मंत्री बनल छल। तखन विजयानंद एकटा संस्मरण लिखने छलथिन जे कुमार साहेबक कैकटा पक्षकैं उजागर कयल, विजयानंद जी कैं राजनीतिमे रूचि नहि छलनि हिनक सासुर प्रसिद्ध गाम कोइलख। धेमकेतुक परिवारमे विवाह

छलनि। पत्नीक नाम छलनि–राधा रमा। विजयानंद जी कैं 'मोहन', 'मोहन' सेहो कहल जाइत छलनि। ओ प्रखर बुद्धिवला व्यक्ति छलाह। पढ़वा–लिखबामे तेज छलाह। वाकपटुता आ सुन्दर विचार सँ युक्त देखल जाइत छलनि। कोनो काजमे अगुताइ नहि छलनि। ओ कठिन परिश्रमी आ जुझारू व्यक्ति छलाह। अपन राजकाज ओ संततिक प्रति सदिखन साकांक्ष रहैत छलाह। खादीक असरि हिनका पहिरावा पर सेहो छलनि। हिनका तीन गोट पुत्र छलथिन। पहिल स्वयं साकेतानंद, दोसर शांभवानं आ तेसर श्रद्धानंद। तीनू गोटे स्वयंमे परिपूर्ण। अपन–अपन कला, क्षमता ओ कार्य करबामे दक्ष छलाह।

साकेतानंद कैं चारिगोट पुत्र आ एक गोट पुत्री अछि। क्रमशरू अभेदानंद उर्फ लाम्भा, परिपूर्ण उर्फ–अधु, भवप्रीतानंद उर्फ मानस, सुन्दरानंद उर्फ–निकुंज आ बेटी–मधुमिता मिश्रा जनिका दुलार सँ 'मिम्मी' कहल जाइत छलनि। अवेदानंद वर्तमानमे पूर्णियामे रहैत छथि, पूर्णिया हाता। पहिने आकाश वाणी सँ जुड़ल छलाह मुदा वर्तमानमे नीजी व्यसाय सँ जुड़ल छथि। विशेषकऽ हुनकर 'ट्यूशनक' काज चलैत छनि। छात्रकैं उच्च चाकरी ओ योग्यताक बनबऽमे सदिखन लागल रहैत छनि। अपने सेहो उच्च शिक्षा धारी छथि। हिनका एक गोट पुत्र आ एक गोट पुत्री छनि। पुत्र 'असीमानंद छथि तऽ पुत्री 'हिमांगी' साकेतानंदक दोसर पुत्र परिपूर्णानंद छथि जे पत्रकार छथि। इहो पूर्वमे 'सर्चलाइट' केर संपादक होइत छलाह। हिनका एक मात्र पुत्री 'चारू हासनी' नामक छनि तेसर पुत्र भवप्रीतानंद उर्फ 'मानस' सेहो उच्च योग्यता धारी छथि आ रॉचीमे पत्रकारिता कऽ रहल छथि। हिनको एक मात्र पुत्रीदृ "श्रीजा" छनि। चारिम पुत्र सुन्दरानंद उर्फ निकुंज सेहो अपन पढ़ाइ लिखाइ पुर कऽ वर्तमानमे खानगी चाकरीमे कऽ रहलाह अछि। हिनका एक गोट पुत्र आ एक गोट पुत्री छनि। पुत्र 'शुभानंद' तऽ पुत्री 'नयनिका' नामक छनि। साकेतानंदक इकलौती सुपुत्री मधुमिता मिश्र एक कुशल ग्रहिनीक भूमिकामे रहलीह। हिनकर सासुर दरभंगा शहर सँ सटल चतरिया छनि। हिनकर वर पत्रकारिता सँ अवकाश प्राप्त कयने छथि। हिनका सेहो एक पुत्रदृ "अंशुमान मिश्र" छनि तऽ एक मात्र पुत्री 'अन्नी छनि।

साकेतानंद जीक जन्म दरभंगाक सचिव सदने भेल। मुदा हिनकर दूटा जन्म तिथि अंकित अछि। 'गणनायक' नामक हिनक कथा संग्रह मे जे जन्मतिथि अंकित अछि।५ ओ अछिदृ 27 फरवरी 1940। आ 'सर्वस्वांत' उपन्यास जे राजकमल प्रकाशन, दिल्ली सँ प्रकाशित अछि ओहिमे अंकित अछिदृ 26 जनवरी, 1941 ई०। पत्रिका भारती–मं. डन अंक–14 मे एकटा आलेख केदार काननक प्रकाशित अछिदृ 'सफरी झोरा मे साकेतानंद'। एहिमे केदार कानन लिखैत छथिदृ "जनिक दू गोट जन्मतिथिक उल्लेख अछि, पहिल 26.10.1941 दोसर 27.०२. 1940। अपन जीवनक. ालमे राजकमल चौधरी जकॉ ओहो अपन जन्मतिथिक कोनो खंडन नहि कयलनि, मुदा हुनकर दोसरे जन्मतिथिक प्रामाणिक लगैत अछि।"

अस्तुरू हिनक जन्म तिथिदृ २७.०२.१६४० कैं मानल जा सकैत अछि।

तहिया स्कूलक बड़ अभाव रहैत छल। कतौ–कतौ स्कूल रहैत छल, जतऽ कोसो पायरे चलि कऽ विद्या ग्रहण करैत छल। तहिया हिनकहि पारिवारिक लोकक सहयोग सँ गामेमे बेसीक स्कूलक निर्माण भेल छल जाहिमे साके. तानंद वर्ष 1951 सँ 195७ उधारि अध्ययन कयलनि। पछाति विलियंस हाई स्कूल सँ मैट्रिक, सी०एम०कॉलेज, दरभंगा सँ इन्टर आ पटना विश्वविद्यालय पटना सँ ऑनर्सक पढ़ाइ पुर कयलनि। तहिया हिनका निवास (कुमार गंगानंद सिंहक निवास होइत छल) 10, गार्डिनर रोड (वीरचंद पटेल पद, पटना) होइत छल। ओ आनर्सक पढाइ करबाक लेल साढ़ेसात बजे भिनसरे चलि।

हिनकर विवाह दरभंगा जिलाक पिन्डारूच गामक एक प्रबुद्ध संपन्नशाली व्यक्ति उमेश ठाकुरक सुपुत्री माधवी सँ विवाह भेल जकरा मनोरमा नामे अभिहीत कयल गेल छलनि।

साकेतानंदक उपनाम छल 'मन्नु भाइ'। मन्नु भाइ कहला सँ साकेतानंदक अर्थ मानल जाइत छल।

फोटो ग्राफी हुनकर प्रिय रूचि छलनि। फोटों खींचब अत्यंत प्रिय लगैत छलनि। छोट–छोट ऑखिला साके. तानंदक छवि गंभीर छलनि। ओ सदिखन नमहर कुरता पैजामा वा पैंट पहिरैत छलाह। कन्हा छुछे नहि रहैत छलनि। एकटा लटकल सफरी झोरा आ झोरी अवश्य एकटा कैमरा, कागज, कलम, लिफाफा, फैस्ट कार्ड रहैत छलनि।

साकेतानंद अपन कर्म ओ लेखनीक बलैं कतोक सम्मान ओ पुरस्कार करैत रहलाह जाहिमे साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1999 मे प्रमुख अछिदृ कथा संग्रह 'गणनायक पर ई पुरस्कार देल गेल छलनि। एकर अतिरिक्त 'मिथिला विभूति', मिथिला रत्न आदि सम्मान सँ अलंकृत सेहो छलाह।

ओ आजीवन आकाशवाणी अथवा आकाशवाणी सँ प्रकाशित मैथिली कार्यक्रमक सेवा एक चाकरी रूपैं करैत

अवकाश ग्रहण कयने छलाह।

एक बेर ओं विश्व भ्रमण के लेल निकलि गेलाह, से आकाशवाणीमे चाकरी सँ पूर्व। ओ एकर आरंभ सहरसा न्यू कौलोनी स्थित आवास सँ कयलनि। हाल धरि हुनकर बड़का जूत्ता (बूट) जे छोड़ि के गेलाह से बहुत दिन धरि पूर्णियॉमे पड़ल छल। तहिया बहुत दिन धरि आसमे लोक रहल छलाह जे अओताह मुदा हुनकर ओ यात्रा सरकारी आदेश नहि भेटला पर स्थगित भऽ छलनि।

साकेतानंद जी सन 1962 सँ रचना करब आरंभ कयलनि। मैथिलीक सभ छोट–पैघ पत्रिकामे तीन दर्जन कथा, अनुवाद आ रिपोर्ताज प्रकाशित भेलनि। हिन्दीमे सेहो दू दर्जन कथा–कहानी, आ कहानियॉ, लहर, उत्कर्ष, अणिमा, सारिका आदिमे प्रकाशित भेलनि। रेडियो लेल कथा, नाटक, रूपक आदिक लिखलनि। किछु सिनेमा लेल स्क्रिप्ट सेहो लिखलनि। हिन्दीमे एन्थोलॉजीदृ "बरफ की अरणियॉ" प्रकाशित भेल अछि तऽ मैथिलीमे गणनायक (कथासंग्रह), 'सर्वस्वांत' (उपन्यास) ओ "कोसी रातक गंगा" (संस्मरण) प्रकाशित अछि।

'गणनायक' मे संकलित कथा अपन कथ्य आ विरल शिल्पक कारण विशिष्ट अछि। निम्नवर्गीय आ निम्न–मध्य वर्गीय जीवनक पीड़ा आ विडम्बनाकेँ ओ अपन कथामे अत्यंत कुशलताक संग–व्यक्त कयलनि। 'गणनायक' कथामे तऽ वोट राजनीति जे ओछपना व्यक्त भेल अछि, से मार्मिक अछि। गामक सहज–निश्छल, निरक्षर आ गरीब–गुरबाक संग हमर सभक प्रतिनिधि कोन तरहेँ 'पेश' अबैत छथि, ई देखब योग्य अछि। भाषा पर हुनक पकड़ एतेक सघल अछि जे पढ़वा काल लगैत अछि जे हुनक कलम के चुनि लेल जाय। जीर्ण–शीर्ण जमींदारी प्रथाक भग्नावशेष आ तकरा सँ उत्पन्न विद्रूपता–विरूपताक संतुलित आरेखन ओ अपन कथा सभमे कयलनि अछि। एकटा सघल आ सिद्ध भाषामे ओ अपन बात कहबामे सफल भेलाह अछि। 'गणनायक' के संग्रहक अतिरिक्त हुनक किछु कथा सभ जे हिन्दीदृ मैथिली पत्रिकादिमे प्रकाशित भेल, मुदा एखन धरि असंकलिते अछि।[६]

तहिना हुनक संस्मरणक एक संग्रह 'कोसी कातक गंगा' नाम सँ 2011 ई. मे प्रकाशित भेल। एहि मे 7 गोट संस्मरण अछि। स्वयं मे ई सभ विलक्षण अछि। ई संस्मरण हुनक जीवनक वास्तविकताकेँ प्रदर्शित करैत अछि। मैथिलीमे कथ्य, विषयक विविधता, भाषाक प्रवाह आ विशिष्ट शैलीक कारण पोथी विलक्षण अछि। अपना सम्यक् ई जीवंत दस्तावेज थिक।[७]

'सर्वस्वांत' नामक एकटा उपन्यास 2003 मे राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली/पटना सँ प्रकाशित अछि। पूर्णियॉ हुनकर गृह जिला आ नवहट्टा हुनक आयब–जायब छलनि। आ ओतय रहैत ओ कोसीमे बसल सामान्य जनक पीड़ा केँ बहुत लगसँ देखने रहथि। कोसीकेँ ओ अपन अनुभव ऑखि सँ देखने रहथि, ओहिठामक जन–जीवन, ओ. हिठामक व्यथा–कथा आ ओछ ओ क्षूद्र जनी के भोगने रहथि। एकर अत्यंत मार्मिक अभिव्यक्ति हुनक ई 'सर्वश्वांत' उपन्यासमे भेल अछि।[८]

पत्र चिट्ठी अथवा खत कोनो कागत वा अन्न माध्यम पर लिखल सन्देश के कहल जाइत अछि। 19म् एवं 20म् शताब्दीमे पत्रहि दू गोट व्यक्तिक मध्य संचारक सभसँ विश्वसनीय माध्यम छल। मुदा आब एकर भूमिका कम भऽ गेल। बुझना जाइत अछि। तथापि पत्र सभक एक महत्वपूर्ण स्थान सभक जीवनमे मानल जा सकैत अछि, कारण पत्र संचारक एक सुगम साधन रहल अछि। एखनो एकर महत्ता अछिये।

साकेतानंद सेहो अपन मित्र, वरेण्य, ओ आन लोकमे पत्रक माध्यमक उपयोग खूब करैत छलाह। सदिखन हुनका लग व कुछ चीट्ठी पतरी कागत–कलम झोरा झोरीमे रहितहि छलनि। अपने लेखकीय जीवनक बहुतोक विषयक विद्याकेँ पत्रकेँ माध्यम सँ उकेरैत छलाह। एहिठाम एकटा पत्रक अंशक दृष्टांत दैब समीचीन लगैत अछि जाहिसँ हुनक लेखकीय जीवनक संग व्यक्तिगत, ओ सामाजिक जीवनक प्रतिपूर्ति कोना हुनक पत्र कहैत छल से स्पष्ट होइत अछि–

प्रिय श्री केदार, आशीष। पटना, 19.०२.२००३

अहॉक कृपा–पत्र समय पर प्राप्त भेल। अहॉक संस्मरण नीक लागल ई जानि हमरा ओतबे प्रसन्नता भेटल अछि जत्ते कोनो संपादक के बधाइ प्राप्त कोनो लेखक के होति छैक।

हम लेखक आ लेखनकेँ राजनीति आ राजनीतिक सँ ऊपर मानैत छी। कोनो दलित लेखन, मनुवादी लेखन आ ब्राह्मणक लेखन आदि के तुच्छ आ लेखक सन स्वतंत्र प्राणीक हड्डी मानैत छी। हमरा लेखन व्यवस्था विरूद्ध आ अखिल मानवताक सेवाक एकटा औजार हथियार बुझि पड़ैत छैक। तैं ई हमर जीवकिाक नै साधन कहियो रहल अछि आ ने हैतऽ ई हमर मिशन अछि। जीबाक कारण। सांस लैक कारण। अहॉ नीक लगैत अछि त' पढू नै

त' छोड़ि दियो। हमरा लय धन सन। नै ककरो नीक लगै लय लिखलहुँ, नै कोनो पुरस्कार लय लालायति भेलहुँ आ नै लोक चीन्हे ताहि लय कोनो प्रयास। लेखककैँ अपेक्षा–साहित्यक–नेता कैँ हम ओतबे तुच्छ मानैछी जतबा आइ–काल्हुक गुंडानुमा नेता आ नेतानुमा गुंडा सबके।

अहॉंक सुझाव मानलहूँ जैँ अहॉं सन छोट गुरूभाइ लिखबे लय अहीं जकॉं खोचारलक तँ संस्मरण लिखब। आइ–काल्हि एकटा फिल्मक स्क्रिप्ट लिखैमे लागल छी–जकरा अंग्रेजीमे बनेबाक योजना निर्मातागण कैँ छनि। तैं भरि दिन अपन कोठलीमे बंद रहै छी–काज, टी.भी. आ कि निंदक गोली खा क' सुतैत। दुनिया जाघ भीड़मे।

सस्नेह, साकेतानंद

एहेन जे रचनाकार छलाह–साकेतानंद, से स्वयं अपन रचनाक आ प्रभाव आदि पर लेखनी चला अपन मनोभ·ााव व्यक्त कयलनि अछि। ई मनोभाव 'गणनायक प्रथम फलैप पर अंकित भेल अछि जकरा एहिठाम अंकित करब समीचीन लगैत अछि–

"हमर लेखन पर कोनो एक गोटाक
प्रमुख नहि। मैथिली, हिन्दी, बंगला,
आ अंग्रेजीक ओहन सब लेखक
जे मनुष्यक दिशा आ दशाक वर्णन
कयलनि आ जिनकर रचना पढ़ैक
अवसर लागल । हमर मोनमे कोनो
संवेदनाक अबिते जे चित्र बनैत
अछि, ओकरा अनुभवक कौरवन
शब्दक माध्यम सँ उकेरबा लय
बाध्य होइ छी। मुदा, कखनहुँ
शब्दक सीमाक मान भेला सन्ता
कलम छोड़ि कैमरा उठा लैत छी।
कलम आ कैमराद्द यैह दुनू ककरादिक
बीच पेंडुलम बनल हम डोलैत
रहै छी–"

मृत्यू–

साकेतानंद जीक मृत्यू 22 दिसम्बर 2011 ई. क मनहुस दुपहरमे भऽ गेलनि। नमहर बीमारी 'कैंसर' हुनका ओतऽ लऽ कऽ चलि गेल जतऽ कोई धुरि कऽ नहि आवि पबैत अछि।

निष्कर्षतः ई कहल जा सकैत अछि जे साकेतानंद मैथिलीक महत्वपूर्ण कथाकार ओ उपन्यासकारेटा नहि अपितु विलक्षण रचनाकार छलाह ओ विलक्षण फोटो ग्राफर छलाह। संगीत प्रेमी छलाह। ओ एक सहज, स्वाभाविक सौम्यतासँ युक्त रचनाकार छलाह।

uthor's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–

1. मैथिली अकादमी पत्रिका, अंकदृ 1, वर्ष– 23, जनवरी– अप्रैल– 2001 पृ. 1
2. वएह

3. मैथिली उपन्यास मे चित्रित समाजरू संपादक– डॉ. रमानंद झा 'रमण' आलेखदृ मैथिली उपन्यासक समाजक बदलैत चित्रदृ डा. आनंद मिश्र, पृदृ 14, प्रकाशक चेतना रीति, पटना।
4. स्मारिका, 2003 खुटौना–विमर्श, शुभकामनादृ पृ०– २ प्रकाशक कल्याण पथ दायिनी, खुटौना
5. गणनायक, कथा संग्रह मे अंकित
६. भारती मंडन, अंक– 14, आलेख– 'सफरी झोरा मे साकेतानंद'रू केदार कानन
७. वएह
८. वएह

Cite this Article-

'डॉ. राज कुमार राय; चन्देश्वर राम', 'रचनाकार साकेतानंद ओ हुनक सारस्वत-साधना', Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:1, Issue:05, September-October 2025.

Journal URL- https://www.shodhpith.com/index.html
Published Date- 04 September 2025
DOI-10.64127/Shodhpith.2025v1i50011